कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक समायोजना का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रेनू *पवार*
शोधार्थिनीः

सारांश

मातृ देवा" भवः
"यत्र नारयस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता"
"न गृह गृहमित्या हुर्गुहिणी गृहमिति उज्यते"

प्रस्तुत शोध पत्र कानपुर की ऐस0 ऐन0 सेन0 बालिका इंटर कॉलेज व कानपुर विद्या इंटर कॉलेज में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के पारिवारिक समायोजन पर आधारित है। इस शोध पत्र के माध्यम से कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक समायोजन, उनकी दोहरी भूमिका का निर्वहन व उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया हैं। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में वर्णात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया हैं। इस प्रपत्र को पूर्ण करने में असम्भावित निदर्शन के प्रकार जिसे सुविधापूर्ण निदर्शन के रूप में जाना जाता है का प्रयोग किया गया हैं।

साक्षात्कार अनुसूचि, वर्गीकरण व सारणीयन के माध्यम से तथ्यो को आरोपित किया गया है। षोध की परिकल्पनाओं का सत्यापन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि, लगभग 90 प्रतिशत महिलाएँ यह स्वीकार करती हैं कि कार्यरत होने के कारण उन्हे परिवार व अपने कार्य के बीच संतुलन स्थापित करने में कठिनाइयों का सामना करने के साथ–साथ दोहरी भूमिका का निर्वहन भी करना पड़ता हैं।

उपरोक्त तथ्यों के सत्यापन से यह बात स्पष्ट होती है कि, कार्यरत महिलाएँ इतनी कठिनाइयों से जूझने के बाद भी अपने कार्य व परिवार के बीच सामांजस्य बैठाने में सक्षम पाई गयी। अतः यह कहा जा सकता है कि आज के इस नारी सशक्तिकरण के दौर में महिलाये इतनी सक्षम व आत्म निर्भर बन गई हैं कि वे प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वो घर परिवार हो य उनका कार्यक्षेत्र अपना परचम फहरा रही है।

मुख्य शब्दः–*(1) कार्यरत महिलायें (2) समायोजन / सामांजस्य (3) दोहरी भूमिका*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

रेनू *पवार*,
''कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक समायोजना का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 150–156
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No.20 (SM 459)

परिचय

भारतीय समाज में विभिन्न कालों में स्त्रिय प्रारम्भ से ही पुरूषों के आधीन रही है। चाहें वे शिक्षित हो य अशिक्षित ।

ब्रिटिश शासन काल आने के साथ ही भारतीय सामाजिक आर्थिक व राजनौतिक व्यवस्था में भी परिवर्तन आने प्रारंभ हो गए।

भारतीय अर्थव्यवस्था जो कि पूर्व में पूर्णतः कृषि व लघु–उघोगो व कुटिर उद्योगों पर आधारित थी अब बड़े उद्योगों व औद्योगिकी के लिए तैयार होने लगी।

आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, विज्ञान तथा तकनीकि शिक्षा का प्रचार व प्रसार आदि की प्रक्रियाओं ने परम्परागत भारत को परिवर्तित कर दिया जिसके फलस्वरूप जातिप्रथा, विवाह, खानपान, पर प्रतिबन्ध, पर्दा प्रथा आदि के कठोर नियमों में कमी आने लगी है। साथ ही इन संस्थाओ के स्वरूप व आर्देशों में भी परिवर्तन आने लगे जिसके परिणामस्वरूप भारतीय महिलाओं के परम्परागत मूल्यों, प्रस्थिाति व भूमिकाओं में भी परिवर्तन दिखने लगे किन्तु पूर्णतः नही।

यदि हम आज के आधुनिक परिवेष की बात करें आज भी लोगो की विचारधारा स्त्रियों के प्रति पूर्णतः बदली नही है। वे आज भी स्त्रियों को उनके परम्परागत रूप में ही देखना पंसद करते है कि स्त्री पत्नी धर्म का निर्वहन करे, एक सहायक के रूप में अपने पति के कार्यों में हाथ बटाँए बच्चों का लालन–पालन करें एक सुग्रहणी बनकर घर–बार सम्भाले व उसकी देखभाल करें।

महानगरों में जहाँ सेवारत विवाहित महिलाओं की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है साथ ही उनके पारीवारिक व सामाजिक समायोजन में भी उतनी ही कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। यही कारण है कि इस उभरती हुई सामाजिक समस्या ने कई समाजशास्त्रियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है।

शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण महिलाओं की स्थिति बेहतर हुई है। इनकी सामाजिक व आर्थिक प्रस्थिति में परिवर्तन आये है। परिणामतः जीवन के विभिन्न पक्षो से सम्बंधित समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण तथा व्यवहार में भी परिवर्तन आये है।

गाँधी जी ने कहा था कि किसी भी देश की प्रगति का अंदाजा उस देश या समाज की महिलाओं की प्रगति से लगाया जा सकता है।

आज के बदलते हुए भारतीय समाज के परिदृश्य व स्त्रियों की भूमिका व महत्व के बारे में नीरा देसाई लिखती है कि अब नारी को ना तो बच्चा जनने की मशीन और ना ही घर की दासी ही माना जा सकता है। आज की स्त्री ने अपनी जागरूकता व बौद्धिक कुशलता के कारण एक नई सामाजिक पहचान व महत्ता प्राप्त कर ली है।

कामकाजी महिलाओं के परिवारों में स्त्री एवं पुरूष के सामाजिक, आर्थिक व पारीवारिक

उत्तरदायित्वों एवं भूमिकाओं में परिवर्तन आया है। जिसके कारण आज हमारे भारतीय समाज में पारिवारिक संतुलन स्थापित करने की समस्या विकराल होती जा रही हैं।

कामकाजी महिलाओं को आज दोहरी भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ रहा है। एक ओर पत्नी गृहणी, व मॉ की भूमिका तो दूसर और नौकरी व घर दोनो की दोहरी मागों व तनावों के कारण उन्हें अपने वैवाहिक जीवन में समझौते के संकट का सामाना करना पड़ सकता है।

इस शोध अध्ययन के अंतर्गत यह खोजने का प्रयास किया जायेगा कि कामकाजी महिलाओं के जीवन में एक नई भूमिका के निर्वहन के फलस्वरूप जो परिवर्तन आते हैं इसके बावजूद भी वें अपने पारीवारिक जीवन में सामाजस्य लाने तथा उसे बनाए रखने में कितनी सफल हुई हैं।

अध्ययन की आवश्यकताः–

शोधार्थिनी ने अपने अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया है की कार्यरत महिलाओं का पारिवारिक समायोजन है कि नही इस शोध पत्र के माध्यम से कार्यरत महिलाओं के पारीवारिक समायोजन, उनकी दोहरी भूमिका का निर्वहन व उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया जायेगा।

महिलाओं के कामकाजी होने से उनकी पारम्परिक पारीवारिक व सामाजिक प्रस्थितिव व भूमिका में परिवर्तन आया है आज वे शिक्षित होकर स्वावलम्बी बनने लगी हैं। साथ ही वे परिवार को आर्थिक सहयोग प्रदान करने हेतु धनोपार्जन करने लगी हैं। जिससे उनके भीतर आत्म विश्वास व उत्साह जाग्रत होने लगा है।

किन्तु इतना सब होने पर भी महिलाओं को अपने काम–काज व पारीवारिक दायित्वों के बीच समायोजना करना पड़ता है। इन नई–नई चुनौतियों व संभावनाओं का प्रभाव स्त्री के व्यक्तिगत जीवन में क्या और कैसे पड़ रहा है इसका अध्ययन हम इन शोध पत्र के माध्यम से करेंगे।

संबंधित साहित्य का अध्ययनः–

नीरा देसाई ने अपनी पुस्तक "स्त्री बोध एण्ड सोराल प्रोग्रेस इन इंड़िया में यह बताया है कि पुरूषों के साथ ही साथ अब भारतीय महिलाओं भी यह महसूस करने लगी है कि नारी के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य केवल पति के प्रति कर्तव्यनिष्ट रहने बच्चों को जन्म देने और गृहस्थी संभालने तक ही सीमित नही है किन्तु नारी जीवन का उददेश्य इससे कही अधिक ऊँचा व गम्भीर है।

रास न अपने अध्ययन "दि हिन्दु फैमिली" इन इट्स अर्बन सेटिंग में यह स्पष्ट किया है कि निःसंदेह इतनी संख्या में विवाहित हिन्दु मध्यम वर्गीय महिलाओं का बिना विरोध के नौकरी पाने का मुख्य कारण वर्ग की आर्थिक समस्या को समझने लगे हैं।

भण्डारी माला ने महिलाओं की दोहरी भूमिका वर्तमान जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। बहुत से अध्ययनो द्वारा यह ज्ञात होता है कि स्त्री की दोहरी भूमिका (घर परिवार व ऑफिस

का कार्यरत भार) के कारण भूमिका संघर्ष व तनाव उत्पन्न होता है।

नीरा देसाई– कामकाजी महिलाएँ पारीवारिक तनावों से दूर रहने के लिए कार्यरत है लेकिन जब वे पारीवारिक उत्तरदायित्वों को ठीक ढ़ग से नही निभा पाती है, कार्य के घण्टे अधिक होने पर अपने पति व बच्चो की देखभाल ठीक से नही कर पाती यद्यपि उनके प्रेम व स्नेह में कोई कमी नही होती है। इस स्थिति में पति–पत्नी व परिवार के मध्य तनाव की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है।

अध्ययन के उददेश्यः–

1. कार्यरत महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. कामकाजी महिलाओं के पारीवारिक समायोजना में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
3. कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिका का अध्ययन करना।
4. कार्यरत महिलाओं के बच्चों के पालन– पोषण में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।
5. कार्यरत महिलाओं को परिवार से मिलने वाले सहयोंग को ज्ञात करना।

इस शोध प्रपत्र में कानपुर विद्या मंदिर स्वरूप नगर एवं एस. एन. सेन बालिका इंटर कालेज कानपुर महानगर में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं का चुनाव किया गया।

इस शोध प्रपत्र को पूर्ण करने के लिए असम्भावित निदेर्शन के एक प्रकार जिसे सुविधाजनक निदेर्शन कहते हैं का प्रयोग किया गया हैं।

इस निदेर्शन का चुनाव कम खर्चीला होने के साथ–साथ उत्तरदाताओं की सुविधा व उपलब्धा को ध्यान में रखकर किया गया है।

इस प्रपत्र को पूर्ण करने हेतु तथ्यों के संकलन में काफी कठिनाइयों का सामाना करना पड़ा तथ्यों का संकलन अत्यंत जटिल व कष्टकारी रहा।

इस अध्ययन के अंतर्गत चयनित शिक्षिकाओं की सामाजिक पृष्ठभूमि का तथ्य परक विवरण प्रस्तुत किया गया है। कार्यरत शिक्षिकाओं के संबंध में साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से उनकी, आर्थिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, धर्म, जाति, शिक्षा, परिवार का स्वरूप, बच्चे आदि का विष्लेशण किया गया है।

सामाजिक स्थिति

जातिः– तालिका संख्या–01

क्रम संख्या	जाति समूह	कुल संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य जाति	29	58 प्रतिशत
2	अन्य पिछड़ा वर्ग	10	20 प्रतिशत
3	अनुसूचित जाति	11	22 प्रतिशत
	कुल योग	50	100 प्रतिशत

सारणी संख्या 01 के विश्लेषण के उपरान्त यह बात स्पष्ट हुई कि अधिकांश उत्तरदात्रियाँ सामान्य जाति 29 (58 प्रतिशत) की थी, दूसरे स्थान पर अनुसूचित जाति 11(22 प्रतिशत) तथा तीसरे स्थान पर 10 (20 प्रतिशत) अन्य पिछड़े वर्ग की शिक्षिकाएँ पाई गई। जो कि संख्या के दृष्टिकोण से न्यूनतम थी।

धर्म

क्षेत्रीय कार्य के दौरान यह बात स्पष्ट हुई कि सभी 50 (100 प्रतिशत) उत्तरदायित्व हिन्दू से ही संबंधित हैं।

आर्थिक स्थिति

तालिका संख्या – 02

आय संबंधि तालिका

क्रम संख्या	आय का स्वरूप	कुल संख्या	प्रतिशत
1	40–50 हजार	28	56 प्रतिशत
2	46–50 हजार	19	38 प्रतिशत
3	51–55 हजार	03	6 प्रतिशत
कुल योग		50	100 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने पर यह बात स्पश्ट होती है कि सर्वाधिक शिक्षिकाएँ 28 (56 प्रतिशत) 40–45 हजार आय समूह से संबंधित हैं। दूसरे स्थान पर 19 (38 प्रतिशत) शिक्षिकाएँ 46–50 हजार आय समूह से संबंधित हैं। तीसरे स्थान पर 3 (6 प्रतिशत) षिक्षिकाएँ 51–55 हजार आय समूह से संबंधित हैं।

तालिका संख्या–03

कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिका से संबंधित तालिका

क्रम संख्या	जानकारी का स्वरूप	उत्तरदात्रियों की कुल संख्या	प्रतिशत
1	पूर्णतः सहमत	26	52 प्रतिशत
2	सहमत	22	44 प्रतिशत
3	अनिश्चित	02	04 प्रतिशत
	कुल योग	50	100 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि 96 प्रतिशत महिलाएँ यह बात उन्हे स्वीकार करती है कि कार्यरत होने के कारण उन्हे परिवार व अपने काम के बीच संतुलन स्थापित करनक में दोहरी भूमिका का निर्वहन करती है।

तालिका संख्या –04

कार्यरत महिलाओं की परिवार तथा अपने कार्य के बीच सामांजस्य स्थापित करने संबंधि तालिका

क्रम संख्या	जनकारी का स्वरूप	उत्तरदायित्वो की कुल संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	40	80 प्रतिशत
2	नही	10	20 प्रतिशत
	कुल योग	50	100 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि कामकाजी 80 प्रतिशत दायित्वो के बीच में सामांजस्य स्थापित करने में कठिनाइयों का सामाना करना पड़ता है।

सारे तथ्यों निष्कर्ष व निष्कषों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कार्यरत महिलाएँ समाज में अपना योगदान प्रदान कर रही है। वे अपने परिवार खुषियों व आर्थिक स्थिति को और अधिक मजबूत बनाने में अपना सहयोग प्रदान कर रही है। आज समाज में उन्की अलग पहचान है। कार्यरत महिलाओं को अपने पारीवारिक समायोजन में कुछ तनावो टकरावों व कठिनाइयों का भी सामाना करना पड़ता है किन्तु ये स्थितियाँ सदैव स्थाई नही होती है कामकाजी महिलाये अपने कार्य व परिवार के बीच सामांजस्य बैठाने व मधुर संबंध बनाने में भी अग्रणी हैं।

वे अपने बच्चों को उपयुक्त समया दे पाती हैं व उनके प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन भी कर पाती हैं।

अधिकांश महिलाओं का मानना है कि वेस्वेच्छ से अपना वेतन खर्च कर पाती है व पारीवारिक मुद्दो पर खुलकर बात करती व उनकी भी राय लेना महत्वपूर्ण माना जाता है। साथ ही उन्हे परिवार के वरिष्ठ सदस्यों का सहयोग पूर्ण स्नेह व सहानुभूति भी प्राप्त होती हैं।

सुझावः– शोधर्थिनी द्वारा प्रदत सुझाव इस प्रकार हैं–

1. कार्यरत महिलाओं के घर व कार्यलय का माहौल ऐसा होना चाहिए जिससे उन्हे यह न महसूस हो कि उनको चारो ओर से बहुत सी समस्याएँ घेरे हुए हैं।
2. कार्यरत महिलाओं के स्वजनों द्वारा अधिक से अधिक सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए।
3. कार्यरत महिलाओं को भी पुरूषों की भाँति समानता व स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।
4. समान कार्य का समान वेतन व भत्ते मिलने चाहिए।
5. कार्यरत महिलाओं के कार्यस्थल पर तनावमुक्त माहौल होना चाहिए व स्वस्थ मनोरंजन की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।
6. उनके द्वारा किये गये उत्कृष्ट सहयोग के बदले में कार्यरत महिलो को यथोचित प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार से भी सम्मनित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. *देसाई नीरा — आधुनिक भारत में महिलाएँ*
2. *Kapadia K.M — Marriage and family in India (1996)*
3- *Desaie Neera — Woman in Modern India Bombay (1957)*
4. *कपूर प्रमिला — भारत में कामकाजी महिलाएँ*
5. *अहुजा राम — भारतीय सामाजिक व्यवस्था*
6. *कुमार राज — नारी के बदलते आयाम*
7. *कुमार विपिन — वैश्वीकरण एवं महिला*
8. *गुप्ता सेन पद्मिनी — भारत में कामकाजी महिलाएँ*
9. *गुडे एवं हैट — सामाजिक अनुसंधान की प्रविधियाँ*
10. *महाजन धर्मवीर एवं महाजन कमलेश — सामाजिक अनसंधान*
11. *दैनिक जागरण — चेंजिग स्टेटस वर्किंग वुमेन ऑफ इंडिया*
12. *कपूर प्रमिला — चेजिंग स्टेटस वर्किंग वुमेन ऑफ इंडिया*